'वेद की आधुनिक व्याख्या' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

'वेद आज भी उतने ही प्रासंगिक और सामयिक हैं, जितने आदिकाल में थे'

जयपुर : कार्यक्रम में मौजूद प्रोफेसर अनुराधा चौधरी, प्रोफेसर सुदर्शन शर्मा, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, आमोद कुमार, सुदेश शर्मा, अजीत सबनीश, आलोक पांडे, योगेश वायकर, डॉ. आरवी जहागिरदार और मनीषा गुप्ता।

विधानसभा अध्यक्ष ने किया सम्मेलन का शुभारंभ

जयपुर, 28 दिसंबर (ब्यूरो): केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री अरविंद सोसायटी एवं साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शनिवार को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर प्रांगण के सभागार में शुरू हुआ।

मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव देवनानी ने दीप प्रज्ज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। देवनानी ने इस मौके पर कहा कि वेद आज भी उतने ही प्रासंगिक और सामयिक है जितने प्राचीनकाल में थे। वेद वाणी से नहीं हृदय से पढ़े जाते हैं। ये केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं अपितु ज्ञान के शिखर है। देवनानी ने कहा कि जीवन का उद्देश्य वेदों से ज्ञात होता है। वेद हमें कर्म के लिए प्रेरित करते हैं। वेद हमारा अतीत ही नहीं वर्तमान भी है। वेद पूर्णता का रोडमैप भी तैयार करते हैं। आमजन को वेदों की अनुभूति करवाना विद्वानों का कर्त्तव्य होना चाहिए।

वेद आंतरिक शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। महर्षि अरविंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को जन जन तक पहुंचाने का अनुकरणीय कार्य किया। इस मौके पर देवनानी ने चार पुस्तकों का विमोचन भी किया।

वेद ज्ञान और कर्म दोनों का आधार है

प्रारंभ में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर कैंपस के निदेशक डॉ. सुदेश शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि वेद ज्ञान और कर्म दोनों का आधार है। वेद की ओर लौटना और वेदों को पढ़ना अलग बात है, लेकिन आज वेदों को जीने की आवश्यकता है। साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष डॉ. आर वी जहागीरदार ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। प्रो. सुदर्शन शर्मा, प्रो. अनुराधा चौधरी, प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र, प्रो. मकरंद आर. परांजपे, प्रो. नरेंद्र अवस्थी जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने श्रीअरविंद के जीवन दर्शन से संबंधित सिद्धांतों पर मौलिक उद्बोधन देकर तालियां बटोरी।

ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है, जिसके अंदर जिज्ञासा है

वायु सेना में विंग कमांडर रहे डॉ. आलोक पांडे ने वेद के ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में जोड़ते हुए सारगर्भित उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि वेद शास्वत है, अंतिम वेद अभी लिखा जाना शेष है। वेद ज्ञान का पर्याय है। ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है जिसके अंदर जिज्ञासा है। उन्होंने कहा कि इंद्र और वायु से प्रेरणा लेकर जीवन का लक्ष्य तय करना चाहिए।

वैदिक साहित्य अध्यात्म का आधार

आईकेएस की राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर प्रो. अनुराधा चौधरी ने कहा कि आधुनिक दौर में वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति का और अध्यात्म का मूल आधार है, उसे पुनः खोजा जाना चाहिए। वैदिक ग्रंथों में जीवन के आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक पहलुओं को प्रेरित किया गया है। श्रीअरविंद ने वैदिक साहित्य को केवल प्राचीन ग्रंथ के रूप में नहीं बल्कि एक गहन प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा। उन्होंने अपनी पुस्तक द सीक्रेट ऑफ द वेदाज में वेदों की व्याख्या को नई दृष्टि प्रदान की। उनके अनुसार वेद केवल बाहरी अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह मानव चेतना के विकास के साधन हैं। श्रीअरविंद ने वेदों को व्यावहारिक धरातल पर प्रस्तुत किया। उन्होंने वैदिक देवताओं को मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतीक के रूप में परिभाषित किया। साथी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष प्रो. आरवी जहागीरदार ने आगंतुक विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रो. रेणुका राठौड़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर की मीडिया प्रभारी डॉ. रानी दाधीच ने बताया कि सम्मेलन में करीब 200 विद्वान की उपस्थित रहे। इस मौके पर श्रीअरविंद के साहित्य की पुस्तकों का वितरण भी करवाया गया। विद्वानों के अतिरिक्त श्रीअरविंद के अनुयायी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

आज ये विद्वान देंगे व्याख्यान : रविवार को अखिलेश मिश्रा (आयरलैंड में भारतीय राजदूत), डॉ. आर नारायणस्वामी, परीक्षित सिंह विभिन्न विषयों पर अपने विचारों से लाभान्वित करेंगे। आलोक पांडेय, डॉ. आरवी जहगिरदर, प्रो. रेणुका राठौड़, सुश्रुत बाढ़े, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, पुरटू कुलकर्णी, डॉ. रानी दाधीच, डॉ. उम्बरूधर पति, डॉ. योगेश वल्कर, स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी, प्रो. बीना अग्रवाल, डॉ. डी. दयानाथ, मनीषा गुप्ता मौलिक विचारों शोध पत्र के रूप प्रस्तुत करेंगे।

'लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या' विषयक सम्मेलन सम्पन्न

महर्षि अरविन्द ने अनुभूतिपरक ज्ञान से स्पष्ट किया वेदों का अर्थः वरखेड़ी

ब्यूरो/ नवज्योति, जयपुर। महर्षि श्रीअरविंद घोष के वैदिक ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री अरविंद समिति और साक्षी ट्रस्ट बंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में 'लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या' विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन रविवार को सम्पन्न हो गया। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के कुलपति प्रो.श्रीनिवासा वरखेड़ी ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक विरासत के आलोक में महर्षि अरविंद ने वेदों के एक ऐसे अर्थ को उद्घाटित किया, जो कि उनका अनुभूतिपरक ज्ञान था। चेतना के जिस स्तर पर प्राचीन वैदिक ऋषियों ने वेद मंत्रों का साक्षात्कार किया था, सहस्राब्दियों के बाद एक महापुरुष ने फिर उसी स्तर पर पहुंचकर उनका अनुभव कर उस गुप्त कोष को सभी के लिए प्रकट कर दिया। श्रीअरविंद एक अद्भुत दार्शनिक, कवि, योगी, राजनीतिज्ञ, सामाजिक चिंतक और भविष्यद्रष्टा थे। उज्जैन से आए प्रो. विरूपाक्ष जड्डीपाल ने कहा कि श्रीअरविंद के अनुसार स्वतंत्र भारत को तीन ऐसे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कार्य करना चाहिए, जिससे वैश्विक स्तर पर मानव चेतना के विकास की दिशा निर्धारित होगी। पहला प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान और अनुभव को उसकी संपूर्ण महिमा, गहनता और परिपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का महान प्रयास किया जाना चाहिए। दूसरा इस आध्यात्मिकता को दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान और आलोचनात्मक ज्ञान के नए रूपों में प्रचारित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। तीसरा भारतीय भावना के आलोक में आधुनिक चुनौतियों से निपटने का एक भौतिक तरीका होना चाहिए। दूसरे दिन राउंड टेबल में डॉ.आर नारायण स्वामी, डॉ.परीक्षित सिंह, डॉ.आलोक पांडेय, प्रो. रेणुका राठौड़ सहित अन्य विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए।

क्या बताया सार

दो दिन तक संगोष्ठी में पढ़े गए शोध पत्रों का सार प्रस्तुत करते हुए प्रो रेणुका राठौड़ ने कहा कि श्रीअरविंद के वेदों के प्रति असीम अनुराग एवं श्रद्धा का सबसे हृदयस्पर्शी प्रमाण है कि उन्होंने अपनी प्रमुखतम दार्शनिक पुस्तक 'द लाइफ डिवाइन' के प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ भारत की ऋषि परंपरा को अपने प्रणाम निवेदन तथा चिंतन सूत्र के रूप में एक वैदिक मंत्र को मूल रूप में उद्धृत कर उसके भावानुवाद द्वारा किया है।

दैनिक भास्कर
जयपुर 29-12-2024

वेद की आधुनिक व्याख्या पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

वेदों की ओर लौटना व इनको पढ़ना अलग बात, आज वेदों को जीने की आवश्यकता

भास्कर न्यूज | जयपुर

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीअरविंद सोसाइटी एवं साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हुआ। यह कार्यक्रम संस्कृत विश्वविद्यालय के सभागार में रखा गया।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने दीप प्रज्ज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस दौरान वायु सेना में विंग कमांडर रहे डॉ. आलोक पांडे ने वेद के ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में जोड़ते हुए सारगर्भित उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि वेद शाश्वत है, अंतिम वेद अभी लिखा जाना शेष है। वेद ज्ञान का पर्याय है। ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है, जिसके अंदर जिज्ञासा है। उन्होंने कहा कि इंद्र और वायु से प्रेरणा लेकर जीवन का लक्ष्य तय करना चाहिए। प्रारंभ में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर कैंपस के निदेशक डॉ. सुदेश शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि वेद ज्ञान और कर्म दोनों का आधार है। वेद की ओर लौटना और वेदों को पढना अलग बात है, लेकिन आज वेदों को जीने की आवश्यकता है। साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष डॉ. आर वी जहागीरदार ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। प्रो सुदर्शन शर्मा, प्रो अनुराधा चौधरी, प्रो अभिराज राजेंद्र मिश्र, प्रो मकरंद आर. परांजपे, प्रो नरेंद्र अवस्थी जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने श्रीअरविंद के जीवन दर्शन से संबंधित सिद्धांतों पर मौलिक उद्बोधन देकर तालियां बटोरी।

वेद पूर्णता का रोडमैप भी तैयार करते हैं: विधानसभा अध्यक्ष देवनानी

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि वेद आज भी उतने ही प्रासंगिक और सामयिक है, जितने प्राचीनकाल में थे। वेद वाणी से नहीं हृदय से पढ़े जाते हैं। ये केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं अपितु ज्ञान के शिखर है। जीवन का उद्देश्य वेदों से ज्ञात होता है। वेद हमें कर्म के लिए प्रेरित करते हैं। वेद हमारा अतीत ही नहीं वर्तमान भी है। वेद पूर्णता का रोडमैप भी तैयार करते हैं। आम जन को वेदों की अनुभूति करवाना विद्वानों का कर्तव्य होना चाहिए। वेद आंतरिक शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। महर्षि अरविंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को जन जन तक पहुंचाने का अनुकरणीय कार्य किया। इस मौके पर देवनानी ने चार पुस्तकों का विमोचन भी किया।

वैदिक साहित्य को फिर से खोजा जाना चाहिए : चौधरी

आईकेएस की राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर प्रोफेसर अनुराधा चौधरी ने कहा कि आधुनिक दौर में वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति का और अध्यात्म का मूल आधार है, उसे पुनः खोजा जाना चाहिए। वैदिक ग्रंथों में जीवन के आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक पहलुओं को प्रेरित किया गया है। श्रीअरविंद ने वैदिक साहित्य को केवल प्राचीन ग्रंथ के रूप में नहीं बल्कि एक गहन प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा। उन्होंने अपनी पुस्तक द सीक्रेट ऑफ द वेदाज में वेदों की व्याख्या को नई दृष्टि प्रदान की। उनके अनुसार वेद केवल बाहरी अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं बल्कि वह मानव चेतना के विकास के साधन हैं।

आज ये देंगे व्याख्यान

रविवार को अखिलेश मिश्रा(आयरलैंड में भारतीय राजदूत), डॉ. आर नारायणस्वामी, परीक्षित सिंह विभिन्न विषयों पर अपने विचारों से लाभान्वित करेंगे। आलोक पांडेय, डॉ. आर वी जहगिरदर, प्रो रेणुका राठौड़, सुश्रुत बाढ़े, प्रो राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, पुट्टू कुलकर्णी, डॉ. रानी दाधीच, डॉ. डम्बरूधर पति, डॉ. योगेश वल्कर, स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी, प्रो बीना अग्रवाल, डॉ डी दयानाथ, मनीषा गुप्ता मौलिक विचारों शोध पत्र के रूप प्रस्तुत करेंगे।

सम्मेलन में 200 से अधिक वैदिक विद्वान हुए शामिल

अरविंद ने वेदों को व्यावहारिक धरातल पर प्रस्तुत किया। उन्होंने वैदिक देवताओं को मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतीक के रूप में परिभाषित किया। साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष प्रो आर. वी. जहागीरदार ने आगंतुक विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रो. रेणुका राठौड़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर की मीडिया प्रभारी डॉ. रानी दाधीच ने बताया कि सम्मेलन में करीब 200 विद्वान की उपस्थित रहे। इस मौके पर श्रीअरविंद के साहित्य की पुस्तकों का वितरण भी करवाया गया। विद्वानों के अतिरिक्त श्रीअरविंद के अनुयायी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

दैनिक स्वतंत्र संवाद | सिटी फ्रंट पेज | जयपुर, रविवार 29 दिसंबर 2024 | 02

लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

आम जन को वेदों की अनुभूति करवाना विद्वानों का कर्त्तव्य : देवनानी

दैनिक स्वतंत्र संवाद

जयपुर। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री अरविंद सोसाइटी ... [illegible]

[illegible]

आज ये विद्वान देंगे व्याख्यान

[illegible]

वैदिक साहित्य अध्ययन का अवसर

[illegible]

[illegible]

दैनिक भास्कर

जयपुर 30-12-2024

वैदिक सम्मेलन • 'लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या' विषय पर हुआ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि दर्शन और समाजशास्त्र का समृद्ध स्रोत

भास्कर न्यूज | जयपुर

अंतरराष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन के समापन समारोह में देश-विदेश से जुटे विद्वान।

वैदिक ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन रविवार को संपन्न हो गया। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्रीअरविंद सोसायटी एवं सावी ट्रस्ट बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में 'लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या' विषय पर देश-विदेश के विद्वानों का सम्मेलन बुलाया गया। मुख्य अतिथि केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर श्रीनिवास वरखेड़ी रहे। इनकी मौजूदगी में शोध पत्र पढ़ा गया, जिसका सार था कि वेद भूतकाल के ग्रंथ नहीं है बल्कि भविष्य की एक अमूल्य निधि है, जिनके विषय में सही दिशा में कार्य किया जाना अभी शेष है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद जैसे ग्रंथ न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं, बल्कि दर्शन, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और समाजशास्त्र का भी समृद्ध स्रोत है।

प्रो.वरखेड़ी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत की आध्यात्मिक विरासत के आलोक में महर्षि अरविंद ने वेदों के एक ऐसे अर्थ को उद्घाटित किया, जो कि उनका अनुभूति परक ज्ञान था। चेतना के जिस स्तर पर प्राचीन वैदिक ऋषियों द्वारा वेद-मंत्रों का साक्षात्कार किया गया था। सहस्राब्दियों बाद एक महापुरुष ने फिर उसी स्तर पर पहुंचकर उनका अनुभव कर उस गुप्त कोष को सभी के लिए प्रकट कर दिया। श्रीअरविंद एक अद्भुत दार्शनिक, कवि, योगी, राजनैतिक और सामाजिक चिंतक तथा भविष्य द्रष्टा थे।

दो अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में पढ़े गए शोध पत्रों का सार प्रस्तुत करते हुए प्रो. रेणुका राठौड़ ने कहा कि श्रीअरविंद के वेदों के प्रति असीम अनुराग एवं श्रद्धा का सबसे हृदयस्पर्शी प्रमाण यह है कि उन्होंने अपनी दार्शनिक पुस्तक 'द लाइफ डिवाइन' के प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ भारत की ऋषि परंपरा को अपने प्रणाम निवेदन तथा चिंतन सूत्र के रूप में एक वैदिक मंत्र के साथ किया। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर कैंपस के निदेशक डॉ. सुदेश शर्मा ने बताया कि शोध पत्रों का सार यह था कि श्रीअरविंद के इंटीग्रल योग का आधार भी वैदिक साहित्य था। वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति का आधार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद जैसे ग्रंथ न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं, बल्कि दर्शन, खगोलशास्त्र, चिकित्सा और समाजशास्त्र का भी समृद्ध स्रोत हैं।

वेदों पर हुई राउंड टेबल में विद्वानों ने दिए व्याख्यान

दूसरे दिन राउंड टेबल में अखिलेश मिश्रा, डॉ.आर.नागस्वामी, डॉ.परीक्षित सिंह, डॉ. आलोक पांडेय, डॉ.आरती जहांगीरदार, प्रो. रेणुका राठौड़, सुस्मिता बोस, डॉ.राजेंद्र प्रसाद शर्मा, पुतु कुलकर्णी, डॉ.रानी दाधीच, डॉ.उम्मेदराज पति, प्रो. बीना आफताल, डॉ. योगेश वाईकर, स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी, डॉ.डी. दयानाथ, मनीषा गुप्ता एवं अन्य विद्वानों ने वेदों के अनुप्रयोग, वेद और श्रीअरविंद की कृतियों, वेद प्रकाश और वेदों की अनुभूति पर सारगर्भित व्याख्यान दिए। समापन समारोह में आमोद कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. रवि जहांगीरदार ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

'लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या' विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन रविवार को सम्पन्न हुआ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। महर्षि श्रीअरविंद घोष के वैदिक ज्ञान को जन जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री अरविंद समिति एवं साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में 'लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या' विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन रविवार को सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन राउंड टेबल में डॉ. आर. नारायणस्वामी, डॉ. परीक्षित सिंह, डॉ. आलोक पांडेय, डॉ. आर. वी. जहांगीरदार, प्रो. रेणुका राठौड, सुश्रुत बर्वे, डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा, पुत्तु कुलकर्णी, डॉ. रानी दाधीच, डॉ. डम्बरुधर पति, प्रो. बीना अग्रवाल, डॉ. योगेश वाईकर, स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी, डॉ डी. दयानाथ, मनीषा गुप्ता एवं अन्य विद्वानों ने वेदों के अनुप्रयोग, वेद और

श्रीअरविंद की कृतियां, वेद प्रकाश और वेदों की अनुभूति पर सारगर्भित व्याख्यान दिए।

श्रीअरविंद एक दार्शनिक, योगी, चिंतक, भविष्य दृष्टा थे - प्रो. वरखेड़ी : प्रो वरखेड़ी ने कहा कि भारत की आध्यात्मिक विरासत के आलोक में महर्षि अरविंद ने वेदों के एक ऐसे अर्थ को उद्घाटित किया जो कि उनका अनुभूतिपरक ज्ञान था। चेतना के जिस स्तर पर प्राचीन वैदिक ऋषियों द्वारा वेद-मंत्रों का साक्षात्कार किया गया था, सहस्त्राब्दियों बाद एक महापुरुष ने फिर उसी स्तर पर पहुंचकर उनका अनुभव कर उस गुप्त कोष को सभी के लिए प्रकट कर दिया। श्रीअरविंद एक अद्भुत दार्शनिक, कवि, योगी, राजनीतिक और सामाजिक चिंतक तथा भविष्य दृष्टा थे।

श्रीअरविंद के ज्ञान से निर्धारित होगी विश्व की चेतना: उज्जैन से आए मुख्य वक्ता प्रो विरुपाक्ष जड्डीपाल ने कहा कि श्रीअरविंद के अनुसार स्वतंत्र भारत को तीन ऐसे लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कार्य करना चाहिए जिससे वैश्विक स्तर पर मानव चेतना के विकास की दिशा निर्धारित होगी। पहला प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान और अनुभव को उसकी संपूर्ण महिमा, गहनता और परिपूर्णता के साथ पुण्य प्राप्त करने के लिए महान प्रयास किया जाना चाहिए। दूसरा इस आध्यात्मिकता को दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान और आलोचनात्मक ज्ञान के नए रूपों में प्रभावित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। तीसरा भारतीय भावना के प्रयास में आधुनिक चुनौतियों से निपटने का एक भौतिक तरीका होना चाहिए। कर्नाटक से आए प्रो टी. एन. प्रभाकर ने कहा कि श्रीअरविंद क्रांतिकारी विचारक थे। उनका यह मानना था कि विश्व की कोई भी सभ्यता, दर्शन, चिंतन या संस्कृति इस धरती पर नहीं होती यदि वेद अस्तित्व में नहीं होते।

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी बोले

वाणी से नहीं, हृदय से पढ़े जाते हैं वेद

समाचार जगत न्यूज

जयपुर. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री अरविंद सोसाइटी एवं साक्षी ट्रस्ट बैंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में निरुक्त वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन रविवार को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय प्रांगण के सभागार में शुरू हुआ। मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव देवनानी ने दीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया।

देवनानी ने इस मौके पर कहा कि वेद आज भी उतने ही प्रासंगिक और सामयिक हैं जितने प्राचीनकाल में थे। वेद वाणी से नहीं हृदय से पढ़े जाते हैं। ये केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं अपितु ज्ञान के शिखर हैं। जीवन का उद्देश्य वेदों से ज्ञात होता है। वेद हमें कार्य के लिए प्रेरित करते हैं। वेद हमारा अतीत ही नहीं वर्तमान भी है। वेद पूर्णता का रोडमैप भी तैयार करते हैं। आम जन को वेदों की अनुभूति करवाना विद्वानों का कर्तव्य होना चाहिए। वेद आत्मिक शक्ति का नया प्रकाश करते हैं। महर्षि अरविंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को जन जन तक पहुंचाने का अनुकरणीय कार्य किया।

वैदिक साहित्य अध्यात्म का आधार

आईकिया की राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर डॉ. अनुराधा चौधरी ने कहा कि आधुनिक दौर में वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति का और अध्यात्म का मूल आधार है, इसे पुनः खोजा जाना चाहिए। वैदिक ग्रंथों में जीवन के आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक पहलुओं को चित्रित किया गया है। श्रीअरविंद ने वैदिक साहित्य को केवल प्राचीन ग्रंथ के रूप में नहीं बल्कि एक महान प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा। साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष डॉ. आर. वी. जहागीरदार ने आगंतुक विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. रेणुका राठौड़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर की मीडिया प्रभारी डॉ. रानी दाधीच ने बताया कि सम्मेलन में करीब 200 विद्वान की उपस्थिति रही। इस मौके पर श्रीअरविंद के साहित्य की पुस्तकों का विक्रय भी करवाया गया। विद्वानों के अतिरिक्त श्रीअरविंद के अनुयायी भी कार्यक्रम में शामिल रहे।

इस मौके पर देवनानी ने चार पुस्तकों का विमोचन भी किया। वायु सेना में विंग कमांडर रहे डॉ. आलोक पांडे ने वेद के ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में जोड़ते हुए सारगर्भित उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि वेद शाश्वत हैं, अंतिम वेद अभी लिखा जाना शेष है। वेद ज्ञान का पर्याय है। ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है जिसके अंदर जिज्ञासा है। प्रारंभ में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर कैंपस के निदेशक डॉ. सुदेश शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि वेद ज्ञान और धर्म दोनों का आधार है। वेद की ओर लौटना और वेदों को पढ़ना आसान नहीं है, लेकिन आज वेदों को जीने की आवश्यकता है। साक्षी ट्रस्ट बैंगलुरु के अध्यक्ष डॉ. आर वि जहागीरदार ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। प्रो सुदर्शन शर्मा, प्रो अनुराधा चौधरी, प्रो अभिराज राजेंद्र मिश्र, प्रो मकरंद आर. परांजपे, प्रो विनोद अवस्थी जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने श्रीअरविंद के जीवन दर्शन से संबंधित विषयों पर मौलिक उद्बोधन देकर तालियां बटोरी।

आज ये विद्वान देंगे व्याख्यान

रविवार को ऑरोविल मिश्रा आनंदतीर्थ ने भारतीय (राजपूत), डॉ. आर नारायणस्वामी, श्री परीक्षित सिंह विभिन्न विषयों पर अपने विचारों से लाभान्वित करेंगे। आलोक पांडेय, डॉ. आर वी जहागीरदार, प्रो रेणुका राठौड़, सुकुमार बाहे, प्रो राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, पृथु कुलकर्णी, डॉ. रानी दाधीच, डॉ. हजारुमार पति, डॉ. संतोष कल्यार, स्वामी ज्ञानेश्वरपुरी, प्रो बीना अग्रवाल, डॉ सी रामानंद, मनीष गुप्ता मौलिक विचारों शोध पत्र के रूप प्रस्तुत करेंगे।

वेदों को नई पीढ़ी से जोड़ने और उनकी शिक्षाओं को सरल भाषा में बताना आज की बड़ी जरूरत : वासुदेव देवनानी

ब्यूरो/ नवज्योति, जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि वेदों से नई पीढ़ी को जोड़ने की आवश्यकता है। वेदों की शिक्षाओं को सरल भाषा में बताया जाना आज की जरूरत है। हम कितने भी आधुनिक बन जाएं, वेदों की शिक्षाओं की आवश्यकता हमारे जीवन में सदैव बनी रहेगी। देवनानी शनिवार को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित श्री अरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वेद प्राचीनतम ग्रंथ हैं, लेकिन यह आज भी सामायिक है। लोगों को सरल भाषा में वेदों को समझाना आवश्यक है।

देवनानी ने आह्वान किया कि वेदों का सरलीकरण से विवेचन करें ताकि लोगों को वेदों की अनुभूति हो सके और वे समझ सके कि मानव जीवन की समस्याओं का समाधान वेदों में है। देवनानी ने कहा कि वेद अतीत नहीं वर्तमान है। आमजन को उनकी अनुभूति करने की आवश्यकता है। यह केवल आध्यात्मिक अनुष्ठान ही नहीं है बल्कि चेतना की गहरी परतों तक पहुंचने वाला अथाह ज्ञान है। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के निदेशक सुदेश कुमार शर्मा ने स्वागत उद्बोधन किया।

संगोष्ठी को डॉ अजीत सबनीस और डॉ आलोक पांडे ने भी संबोधित किया। वैदिक मंत्र उच्चारण डॉ सुधाकर पांडे ने किया।

जयपुर महानगर टाइम्स
जयपुर, 29 दिसंबर, 2024

देश और दुनिया की बड़ी खबरें देखने के लिए स्कैन करें और महानगर टाइम्स को लाइक व सब्सक्राइब करें।

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में दो दिवसीय विद्वत-वृत्त लिविंग वेद शुरू

वेद हमारा अतीत ही नहीं वर्तमान भीः देवनानी

महानगर संवाददाता

जयपुर। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री अरविंद सोसाइटी एवं साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में लिविंग वेद श्री अरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शनिवार को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के सभागार में शुरू हुआ। मुख्य अतिथि राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव देवनानी ने दीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस मौके पर देवनानी ने कहा कि वेद आज भी उतने ही प्रासंगिक और सामयिक है जितने प्राचीनकाल में थे। वेद वाणी से नहीं हृदय से पढ़े जाते हैं। ये केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं अपितु ज्ञान के शिखर है। जीवन का उद्देश्य वेदों से ज्ञात होता है। वेद हमें कर्म के लिए प्रेरित करते है। वेद हमारा अतीत ही नहीं वर्तमान भी है। वेद भविष्य का रोडमैप भी तैयार करते हैं। आमजन को वेदों की अनुभूति करवाना विद्वानों का कर्तव्य होना चाहिए। वेद आत्मिक शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। महर्षि अरविंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को जन-जन तक पहुंचाने का अनुकरणीय कार्य किया। इस मौके पर देवनानी ने चार पुस्तकों का विमोचन भी किया।

वायु सेना में विंग कमांडर रहे डॉ. आलोक पांडे ने वेद के ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में जोड़ते हुए सारगर्भित उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि वेद शाश्वत है, अंतिम वेद अभी लिखा जाना शेष है। वेद ज्ञान का पर्याय है। ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है जिसके अंदर जिज्ञासा है। उन्होंने कहा कि इंद्र और वायु से प्रेरणा लेकर जीवन का लक्ष्य तय करना चाहिए।

आज ये विद्वान देंगे व्याख्यान

रविवार को अखिलेश मिश्रा (आयरलैंड में भारतीय राजदूत), डॉ. आर. नारायणस्वामी, परीक्षित सिंह वैदिक विषयों पर अपने विचारों से लाभान्वित करेंगे। आलोक पांडेय, डॉ. आरती लक्ष्मीनारायण, प्रो. रेणुका राठौड़, सुधीर कांडे, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, पुरुषोत्तम कुलकर्णी, डॉ. रश्मि सांवरिया, डॉ. रामचन्द्र पीएच. डॉ. संतोष ठाकुर, स्वामी ब्रह्मेशानन्दपुरी, प्रो. कौशल अग्रवाल, डॉ. डी. देवाशय, मनीष गुप्ता सहित विद्वान शोध पत्र के रूप प्रस्तुत करेंगे।

वैदिक साहित्य अध्यात्म का आधार

भारतीय ज्ञान सिस्टम की राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर प्रो. अनुराधा चौधरी ने कहा कि आधुनिक दौर में वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति का और अध्यात्म का मूल आधार है, उसे पुनः खोजा जाना चाहिए। वैदिक ग्रंथों में जीवन के आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक पहलुओं को प्रेरित किया गया है। श्री अरविंद ने वैदिक साहित्य को केवल प्राचीन ग्रंथ के रूप में नहीं बल्कि एक गहन प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा। उन्होंने अपनी पुस्तक द सीक्रेट ऑफ द वेदाज में वेदों की व्याख्या को नई दृष्टि प्रदान की। उनके अनुसार वेद केवल बाहरी अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं बल्कि यह मानव चेतना के विकास के साधन है। श्री अरविंद ने वेदों को मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रस्तुत किया। उन्होंने वैदिक देवताओं को मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतीक के रूप में परिभाषित किया।

साक्षी ट्रस्ट बैंगलुरु के मुख्य ट्रस्टी डॉ. आर.वी. जहागीरदार ने आगंतुक विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रो. रेणुका राठौड़ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर की मीडिया प्रभारी डॉ. रश्मि सांवरिया ने बताया कि सम्मेलन में करीब 200 विद्वान की उपस्थित रही। इस मौके पर श्री अरविंदो के साहित्य की पुस्तकों का विक्रय भी करवाया गया। विद्वानों के अतिरिक्त श्री अरविंद के अनुयायी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

प्रारंभ में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर कैंपस के निदेशक डॉ. सुदेश शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि वेद ज्ञान और कर्म दोनों का आधार है। वेद की ओर लौटना और वेदों को पढ़ना अलग बात है, लेकिन आज वेदों को जीने की आवश्यकता है। साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष डॉ. अजीत सबनिस ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। प्रो सुदर्शन शर्मा, प्रो अनुराधा चौधरी, प्रो अभिराज राजेंद्र मिश्र, प्रो मकरंद आर. परांजपे, प्रो नरेंद्र अवस्थी जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने श्री अरविंद के जीवन दर्शन से संबंधित सिद्धांतों पर मौलिक उद्बोधन देकर तालियां बटोरी।

दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन दीप प्रज्जवलन कर किया शुभारंभ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री अरविंद सोसाइटी एवं साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में लिविंग वेद श्रीअरविंद के आलोक में वेद की आधुनिक व्याख्या विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शनिवार को केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर प्रांगण के सभागार में शुरू हुआ। मुख्य अतिथ राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव देवनानी ने दीप प्रज्जवलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। देवनानी ने इस मौके पर कहा कि वेद आज भी उतने ही प्रासंगिक और सामयिक है जितने प्राचीनकाल में थे। वेद वाणी से नहीं हृदय से पढ़े जाते हैं। ये केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं अपितु ज्ञान के शिखर है। जीवन का उद्देश्य वेदों से ज्ञात होता है। वेद हमें कर्म के लिए प्रेरित करते हैं। वेद हमारा अतीत ही नहीं वर्तमान भी है। वेद पूर्णता का रोडमैप भी तैयार करते हैं। आम जन को वेदों की अनुभूति करवाना विद्वानों का कर्त्तव्य होना चाहिए। वेद आंतरिक शांति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। महर्षि अरविंद और स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को जन जन तक पहुंचाने का अनुकरणीय कार्य किया। इस मौके पर देवनानी ने चार पुस्तकों का विमोचन भी किया।

वायु सेना में विंग कमांडर रहे डॉ. आलोक पांडे ने वेद के ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में जोड़ते हुए सारगर्भित उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि वेद शास्वत है, अंतिम वेद अभी लिखा जाना शेष है। वेद ज्ञान का पर्याय है। ज्ञान वही प्राप्त कर सकता है जिसके अंदर जिज्ञासा है। उन्होंने कहा कि इंद्र और वायु से प्रेरणा लेकर जीवन का लक्ष्य तय करना चाहिए।

प्रारंभ में केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर कैंपस के निदेशक डॉ. सुदेश शर्मा ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि वेद ज्ञान और कर्म दोनों का आधार है। वेद की ओर लौटना और वेदों को पढना अलग बात है, लेकिन आज वेदों को जीने की आवश्यक्ता है। साक्षी ट्रस्ट बेंगलुरु के अध्यक्ष डॉ. आर वि जहागीरदार ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। प्रो सुदर्शन शर्मा, प्रो अनुराधा चौधरी, प्रो अभिराज राजेंद्र मिश्र, प्रो मकरंद आर. परांजपे, प्रो नरेंद्र अवस्थी जैसे प्रतिष्ठित विद्वानों ने श्रीअरविंद के जीवन दर्शन से संबंधित सिद्धांतों पर मौलिक उद्बोधन देकर तालियां बटोरी।

वैदिक साहित्य अध्यात्म का आधार: IKS की राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर prof अनुराधा चौधरी ने कहा कि आधुनिक दौर में वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति का और अध्यात्म का मूल आधार है, उसे पुनः खोजा जाना चाहिए। वैदिक ग्रंथों में जीवन के आध्यात्मिक, दार्शनिक और नैतिक पहलुओं को प्रेरित किया गया है। श्रीअरविंद ने वैदिक साहित्य को केवल प्राचीन ग्रंथ के रूप में नहीं बल्कि एक गहन प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में देखा। उन्होंने अपनी पुस्तक द सीक्रेट ऑफ द वेदाज में वेदों की व्याख्या को नई दृष्टि प्रदान की। उनके अनुसार वेद केवल बाहरी अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं बल्कि वह मानव चेतना के विकास के साधन हैं। श्रीअरविंद ने वेदों को व्यावहारिक धरातल पर प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के आखिरी दिन विभिन्न विद्वानों ने कई विषयों पर दिए व्याख्यान

वेद भूतकाल के ग्रंथ नहीं, बल्कि भविष्य की अमूल्य निधि

वेदों को हम सबको जीना है

जॉब के अलावा भी कुछ करें